



47732 - हज्ज के दौरान नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुआ करने के लिए ठहरने की जगहें

प्रश्न

वे कौन सी जगहें हैं जहाँ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुआ करने के लिए ठहरे थे?

विस्तृत उत्तर

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह तआला के लिए योग्य है।

हमें जो प्रतीत होता है, वह यह है कि प्रश्न में दुआ करने के लिए ठहरने की जगहों से अभिप्राय वे जगहें हैं, जहाँ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज्ज के दौरान दुआ करने के लिए ठहरे थे। विद्वानों ने उल्लेख किया है कि वे छह स्थान हैं।

इब्नुल कैयिम रहिमहुल्लाह फरमाते हैं :

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हज्ज के दौरान छह स्थान ऐसे थे, जहाँ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुआ करने के लिए ठहरे थे :

पहला स्थान : सफ़ा पर, दूसरा : मरवा पर, तीसरा : अरफा में, चौथा : मुज़दलिफ़ा में, पाँचवाँ : पहले जमरह के पास, और छठा : दूसरे जमरह के पास।

“जादुल-मआद” (2/287, 288).

इन स्थानों का विवरण इस प्रकार है :

1- सफ़ा और मरवा पर दुआ करना :

यहाँ पर दुआ का तरीका यह है कि वह क़िबला की ओर मुँह करके तीन बार तकबीर (अल्लाहु अकबर) कहे, फिर वह सुन्नत में वर्णित अज़कार को तीन बार पढ़े और उसके बीच में दुआ करे।

शैख मुहम्मद बिन सालेह अल-उसैमीन रहिमहुल्लाह ने कहा :

“वह अपने दोनों हाथों को दुआ में उठाने के रूप में ऊपर उठाए हुए तीन बार "अल्लाहु अकबर" कहेगा, फिर वर्णित दुआएँ

पहले नबियों ने जो सबसे अच्छी दुआ की वह यह है : “ला इलाहा इल्लल्लाह, वहूदहू ला शरीका लह, लहुल-मुल्को व लहुल-हम्द, व हुआ अला कुल्लि शैइन कदीर” (अल्लाह के सिवा कोई सच्चा पूज्य नहीं। वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं। उसी के लिए प्रभुत्व है, और उसी के लिए हर प्रकार की प्रशंसा है। और वह हर चीज़ पर सर्वशक्तिमान है।” इसे तिर्मिज़ी (हदीस संख्या: 3585) ने रिवायत किया है, और अलबनी ने “सहीह तिर्मिज़ी” में इसे हसन कहा है।

3- हाजी के लिए सुन्नत है कि मुज़दलिफा में अपने दोनों हाथों को उठाकर और क़िबला की ओर मुख करके, फ़ज्र की नमाज़ के बाद से लेकर सुबह के अच्छी तरह रोशन होने तक दुआ करे। अल्लाह तआला ने फरमाया :

فَاذْكُرُوا اللَّهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ الْبَقْرَةَ. / 198

“तो तुम मश्अर-ए-हराम के पास (यानी मुज़दलिफ़ा में) अल्लाह को याद करो।” (सूरतुल बकरा : 198)

4- पहले (यानी सबसे छोटे) जमरह और दूसरे (यानी मध्य) जमरह को कंकरी मारने के बाद दुआ करना। यह केवल तश्रीक के दिनों में होगा। तथा बड़े जमरह को कंकरी मारने के बाद दुआ करना धर्मसंगत नहीं है, न तो कुर्बाना के दिन और न ही उसके बाद के दिनों में।

और अल्लाह तआला ही सबसे अधिक ज्ञान रखता है।